छोटी सी आशा

सुषमा मुनींद्र

छोटी सी आशा

उपन्यास

सुषमा मुनीन्द्र

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2022

© सुषमा मुनींद्र

भूमिका

मेरी अब तक पन्द्रह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं पर मैंने किसी पुस्तक में भूमिका नहीं लिखी। आवश्यकता यूँ महसूस नहीं हुई कि मुझे जो कहना है कहानियों में कह दिया है। अब जो कहना है पाठक कहेंगे। चूँकि यह मेरे उपन्यास 'छोटी सी आशा' का द्वितीय संस्करण है, बताना अपरिहार्य लग रहा है मैंने दूसरे संस्करण की आवश्यकता क्यों समझी ?

उपन्यास बिहार प्रांत के दूल्हा अपहरण समस्या पर आधारित है। यह प्रथा या कुप्रथा नहीं वरन ऐसी असामाजिक, असंवैधानिक भयानक युक्ति है जिसमें कन्या पक्ष वाले बलपूर्वक अपेक्षित युवक को पकड़ या पकड़वा कर उसका अपनी कन्या के साथ जबरिया विवाह करा देते हैं। बिहार में सौराठ सभा भी होती है जिसमें दूल्हे बिकने के लिये लाये जाते हैं। निम्न वर्ग में प्रचलित इस विचित्र चलन को प्रथा या कुप्रथा कहा जा सकता है। इस चलन में आपसी सहमति होती है जबकि जबरिया विवाह पूरी तरह अंधेरे में तीर चलाने की भाँति है। यहाँ सफलता कम, विफलता का सामना अधिक करना पड़ता है। मैंने एक राजनीतिक पत्रिका में इस समस्या पर गम्भीर आलेख पढ़ा था। पढ़कर स्तब्ध हुई भारत में एक प्रांत ऐसा है जहाँ ऐसी अव्यवहारिक गतिविधि होती है। पत्रिका में जबरिया विवाह के कुछ मामलों का उद्धरण दिया गया था। एक प्रसंग पर मैंने कहानी 'परिणय' लिखी थी। एक छात्रावास में दो रूम पार्टनर युवक आई. ए. एस. की तैयारी कर रहे थे। आई. ए. एस. लड़के का मूल्य बहुत ऊँचा माना जाता है। कन्या पक्ष ने सुनिश्चित किया आई. ए. एस.

बनने के पहले युवक का अपहरण कर जबरिया विवाह करा दिया जाये। गिरोह को समझा दिया गया अमुक युवक जो सजातीय है का अपहरण करना है। गिरोह ने अपहरण का वक्त और दिन तय कर लिया। तय दिवस पर अपेक्षित युवक अपने गृह नगर चला गया। गिरोह ने गलतफहमी में उसके रूम पार्टनर को पकड़ लिया। विवाह के बाद कन्या के विप्र परिवार को ज्ञात हुआ यह अपेक्षित युवक नहीं निम्न जाति का अनपेक्षित युवक है। इसके पैर पूज कर विप्र जाति पर कलंक लग गया है। उसे मार डालने की योजना बनाई। कन्या ने योजना को भाँप लिया। यह जो भी है अब मेरा पति है, मेरा जीवन - मरण इसी के साथ होगा..... जैसा पत्र लिख, चकमा देकर कन्या, युवक के साथ भाग गई। इसी तरह के कुछ उद्धरण दिये गये थे। कुछ परिवारों ने कन्याओं को अपना लिया था, कुछ मायके में रहने को अभिशप्त थीं।

कहानी लिख कर मुझे संतोष न हुआ। लगा समस्या गम्भीर है। बड़ी रचना लिखी जा सकती है। सतना में बसे कुछ बिहारी परिवारों से चर्चा की। अब तो डाला छठ यहाँ धूम-धाम से मानाया जाता है। आज याद नहीं है वह कौन सा क्षण था जब मैं यह उपन्यास लिखने के लिये प्रवृत्त हुई और 360 पन्ने लिख डाले। 360 पन्ने का उपन्यास 'छोटी सी आशा' 2002 में प्रकाशित हुआ। मेरी साहित्यिक यात्रा को आरंभ हुये थोड़ा वक्त हुआ था। मेरे सम्मुख पहचान का संकट था। प्रकाशकों ने प्रकाशित करने में असमर्थता व्यक्त की। स्थानीय प्रकाशक से प्रकाशित कराया। पत्रिकाओं में समीक्षार्थ प्रतियाँ भेजीं। सफलता नहीं मिली। आज की सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रोहिणी अग्रवाल ने जरूर आश्वासन दिया - मैं इस समस्या से वाकिफ नहीं थी। नया विषय है। उपन्यास में सम्भावना है। मैं समीक्षा

लिखूँगी। रोहिणी जी ने समीक्षा लिख कर एक-दो पत्रिकाओं में भेजी। सफलता नहीं मिली। उन दिनों रोहिणी जी भी साहित्य के क्षेत्र में नया नाम थीं अतः उनकी समीक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया होगा। मैंने उनकी आभारी हूँ कि मेरे उपन्यास को रुचिपूर्वक पढ़ कर हौसला दिया। इधर दो-तीन वर्षों में दूल्हा अपहरण पर कुछ कहानियाँ छपी हैं। किसी में इसे पकड़उआ विवाह कहा गया है, किसी में जबरिया विवाह। अचरज है रोहिणी जी की स्मृति में आज भी मेरा उपन्यास जीवित है। कहानियाँ पढ़ कर उन्होंने फेस बुक पर पोस्ट डाली - सुषमा मुनीन्द्र इस विषय पर बहुत पहले उपन्यास लिख चुकी हैं जिसकी चर्चा होनी चाहिये थी। इस विषय पर एक-दो टी. वी. धारावाहिक भी बने हैं। 2019 में 'जबरिया जोड़ी' मूवी बनी। इन स्थितियों खास कर रोहिणी जी की पोस्ट ने मुझे उत्साहित कर दिया कि 'छोटी सी आशा' का द्वितीय संस्करण के तौर पर पुनर्जन्म जो सकता है। वैसे तो 'छोटी सी आशा' के अंश कहीं प्रकाशित नहीं हुये पर गंगा नगर से प्रकाशित होने वाले एक अखबार में कुछ अंश धारावाहिक रूप में छपे थे। अधिकांश पाठकों का मत था वे इस समस्या से अनभिज्ञ थे। संयोगवश इस अंश को साहित्यकार डॉ. लता शर्मा ने पढ़ा। उन्होंने कथाक्रम समारोह 2007, जिसमें मैं भी उपस्थित थी, में इसकी जोर देकर चर्चा की। मैं उनसे परिचित नहीं थी पर उन्होंने लिखित पर्चे में इसका उल्लेख किया और पूछा एक अछूते विषय पर लिखे गये उपन्यास पर चर्चा क्यों नहीं होती ? उल्लेख सुन कर मुझे लगा उपन्यास लोगों तक नहीं पहुँच सका पर मैंने अपना काम मेहनत और ईमानदारी से किया है। मैं डॉ. लता शर्मा की आभारी हूँ। डॉ. सुशीला दुबे, पुणे की आभारी हूँ जिन्होंने मेरी कई कहानियों, कहानी संग्रह 'विलोम' उपन्यास 'छोटी सी आशा' का मराठी भाषा में अनुवाद कर मराठी भाषी पाठकों

तक पहुँचाया। 'छोटी सी आशा' का मराठी संस्करण 2015 में प्रकाशित हुआ। अचरज हुआ जब डॉ. मीनाक्षी गोस्वामी का पत्र मिला उन्होंने पुस्तकालय में उपलब्ध इस उपन्यास को पढ़ा। वे इसका असमिया भाषा में अनुवाद करना चाहती हैं। असमिया संस्करण 2019 में आया। इसके कुछ अंश असमिया पत्र-पत्रिकाओं में छपे। मैं मीनाक्षी जी की आभारी हूँ जिन्होंने 'छोटी सी आशा' को असमिया भाषी पाठकों तक पहुँचाया। इन कुछ कारणों से मुझे बोध हुआ इसका द्वितीय संस्करण आना चाहिये। कच्ची कलम से लिखे गये उपन्यास में कुछ दोहराव था अतः मैंने इसे सम्पादित किया। प्रकाशक ने प्रकाशित करने का मानस बनाया। उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

पाठक इसे पढ़ेंगे और गलत चलन को प्रश्रय नहीं देंगे - इस 'छोटी सी आशा' के साथ -

सुषमा मुनीन्द्र

1

नीरजा आज फिर बंसी वाले की मूर्ति के सामने खड़ी है। वह जब इस मूर्ति के सामने खड़ी होती है उसे दुनिया जहान की सुध-बुध नहीं रहती। कहीं कोई नहीं, कुछ नहीं। ... वह है, बंसी वाले की मूर्ति है ... दुनिया बस इतनी ही है।

नीरजा जब भी प्रसन्न - अप्रसन्न, सुखी-दुःखी, संशय-द्विविधा में होती है कुछ इस भाव से मूर्ति के सामने खड़ी हो जाती है जैसे कहना चाहती हो सब तुम्हारा किया धरा है। आज उसका भाव दूसरा है - क्या करने जा रहे हो मुरारी ? इसलिये तुम्हें पूजा ? तुम्हारी आराधना की ?

नीरजा जब ग्यारह-बारह वर्ष की थी तब से इस मूर्ति से संवाद करती आ रही है। इस मूर्ति को बाबूजी किसी मेले से लाये थे। यही कोई आठ-नौ इंच लम्बी, सफेद संगमरमर की मूर्ति - पीली परदनी, पीला अंगरखा, कंधों पर आच्छादित काले घुंघराले केश, केशों में मोर पंख, लाल अधर, नयनाभिराम नेत्र और पतली लम्बी उँगलियों में परिचित कलात्मक मुद्रा में फँसी हुई बांसुरी। बनाने वाले ने जैसे सारी कला इस मूर्ति में झोंक दी थी। बचपन से नीरजा के आराध्य ईश श्री कृष्ण रहे हैं। वह मेले से बेसाह कर लायी गई मूर्ति को बाबूजी के हाथों से लगभग झपटते हुये बोली थी -

"बाबूजी इस मूर्ति को मैं अपने पास रखूँगी। आहा.... कितनी सुंदर मूर्ति है।"

"नीरजा, यह कोई गुड्डा - गुड़िया नहीं है जो तुम लोगी। भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति है। इसे उस चौकी पर रख दो जहां भगवान का आसन है।"